5

शिक्षण-अधिगम प्रकिया में शिक्षण-अधिगम विधि एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री की महत्ता (क्रियात्मक शोध)

चित्ररेखा*
मनोज कुमार**

अधिकतर शिक्षार्थी उस विषय-वस्तु को पढ़ने व सीखने में ज़्यादा आनंद लेते हैं, जो कि उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी हो, जिससे उन्हें कुछ करके सीखने का मौका मिलता हो। वे उसी के बारे में सुनना, समझना व बताना चाहते हैं। परंतु सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हम अपने शिक्षार्थियों को बोलने, कुछ करने व उन्हें अपने अनुभव को साझा करने के पर्याप्त अवसर ही नहीं देते, बल्कि अपना ज्ञान व पाठ्यचर्या का ज्ञान ही उन पर थोपते रहते हैं। पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु को उनके दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़ने का प्रयास नहीं करते और उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति व कल्पनाशीलता पर स्वयं ही जाने-अनजाने में ताला लगा देते हैं। जिसके कारण अधिकांश शिक्षार्थी मानसिक रूप से पढ़ने को तैयार नहीं हो पाते। कक्षा में उपस्थित होते हुए भी पढ़ने में उनकी रुचि नहीं बन पाती। पढ़ने के प्रति रुचि को बढ़ाने में शिक्षण-अधिगम विधि, शिक्षण-अधिगम सामग्री व बच्चों के स्वयं के अनुभव किस प्रकार से सहायक हो सकते हैं? क्या शिक्षण-अधिगम विधि के माध्यम से शिक्षार्थियों की सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति व कल्पनाशीलता में उड़ान भरना व उन्हें अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करने का मौका दिया जा सकता है? शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रयोग कहाँ, किसके लिए और क्यों किया जाए? यह लेख इन सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालने के साथ-साथ सेवाकालीन शिक्षकों व प्रशिक्षार्थी-शिक्षकों को शिक्षण-अधिगम प्रकिया के संदर्भ में उनकी भूमिका से उन्हें अवगत कराने का प्रयास करता है।

कहावत है 'सरस्वती के भंडार की बड़ी अनोखी बात, ज्यों खर्चे त्यों-त्यों बढ़े बिन खर्चे घट जात' अर्थात् विद्याधन एक ऐसा धन है, जिसे जितना ज़्यादा खर्च किया जाता है, यह उतना ही बढ़ता चला जाता है और जितना संचित करके रखा जाता है, यह उतना ही कम होता चला जाता है। इस प्रकार विद्यारूपी धन की प्रकृति मौद्रिक धन से विपरीत होती है। अब प्रश्न यह है कि विद्यारूपी यह धन

* *प्रवक्ता*, जिला संसाधन इकाई (डी.आर.यू. विभाग), मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली
** *टी.जी.टी.*, सोशल साइंस, (शिक्षा विभाग), गवर्मेंट बॉयस सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मोती बाग 1, नयी दिल्ली 110021

एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षार्थियों में कैसे बढ़ाया जा सकता है?

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को देखें तो पाएँगे कि व्यवहारात्मक शिक्षा जैसे कहीं खोती जा रही है। चाहे प्राथमिक स्तर की शिक्षा की बात करें या फिर उच्च स्तर की शिक्षा की बात करें। किताबी शिक्षा को ही ज़्यादा बढ़ावा मिल रहा है। शिक्षक व शिक्षा केवल विषय तक ही सीमित हो कर रह गये हैं। पढ़ने और पढ़ाने वालों दोनों में रुचि का अभाव होता जा रहा है जिसके कारण शिक्षण-अधिगम प्रकिया में नीरसता आती जा रही है। शिक्षक अपने बढ़े हुए पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त कराने पर लगे रहते हैं। वे परंपरागत शिक्षण विधि से आगे नहीं बढ़ पाते। परिणामस्वरूप रटकर ज्ञान अर्जित कराने की प्रक्रिया को ही बढ़ावा मिलता है। शिक्षार्थी अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए चीज़ों को रटते हैं उन्हें समझने का प्रयास नहीं करते। वे थोड़े समय के बाद रटी हुई चीज़ों को भूल जाते हैं। जिसके कारण विद्यार्थियों में रुचि व समझ, दोनों ही उत्पन्न नहीं हो पातीं और धीरे-धीरे उनके आत्मविश्वास, स्वचिंतन, सृजनात्मकता व निर्णय शक्ति आदि में कमी आने लगती है और वे शिक्षा व्यवस्था को कोसने लगते हैं। यह स्थिति विद्यालय स्तर पर ज़्यादा भयावह है, क्योंकि इस स्तर पर शिक्षार्थियों के अंदर पढ़ने के प्रति लगाव एवं रुचि उत्पन्न करना एक बड़ी चुनौती होता है। इस स्तर पर सभी शिक्षार्थी प्रथम बार विद्यालय व शिक्षा से जुड़ रहे होते हैं। यदि पढ़ाई गई विषय-वस्तु उनसे संबंधित व उपयोगी नहीं होती या जिसे पढ़ने में उन्हें मज़ा नहीं आता या जो विषय-वस्तु उन्हें समझ नहीं आती तो वे उससे दूर भागना शुरू हो जाते हैं। इस कारण इस स्तर पर उनकी विद्यालय छोड़ने की संभावना ज़्यादा बनी रहती है। शिक्षार्थियों को विद्यालय से जोड़कर रखना और उन्हें पढ़ने के लिए तैयार करना अपने आप में शिक्षक के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह एक कड़ी होती है, जो दोनों को आपस में जोड़े रखती है तथा दोनों के मध्य ज्ञान का संचार करती है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से ही शिक्षक यह तय करता है कि वह अपने शिक्षार्थियों को कैसे पढ़ाएगा? वह किस शिक्षण-अधिगम विधि व शिक्षण सहायक सामग्री का चुनाव करेगा? क्या वह उन्हें सिर्फ़ किताबी व रटा हुआ ज्ञान ही देगा या फिर वह उन्हें क्रियाशील व व्यावहारिक ज्ञान देकर उनका विकास करने का प्रयास करेगा। वह शिक्षार्थियों की जिज्ञासा व क्रियाशीलता का उपयोग कैसे करेगा? उसे और कैसे अधिक बढ़ावा देगा? इन सब मुख्य बिंदुओं पर विचार करते हुए तथा यह सब समझते हुए कि पढ़ने और पढ़ाने, दोनों में काफ़ी अंतर होता है। पढ़ाने के लिए एक शिक्षक को शिक्षार्थियों की रुचि, उनकी समझ, उनके स्तर, विषय के बारे में उनकी पूर्व जानकारी, उनके अनुभवों, पारिवारिक पृष्ठभूमि, उनकी भाषा, उनकी आदतों व व्यवहार आदि सभी को ध्यान में रखकर ही विषय-वस्तु तथा शिक्षण-अधिगम विधि व शिक्षण सामग्री का चुनाव करना होगा। उसे शिक्षण-अधिगम विधि में पर्याप्त सुधार कर अपने शिक्षार्थियों को इस प्रकार से पढ़ाना

होगा कि वे न केवल पढ़ने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाएँ, बल्कि विषय-वस्तु को रटे बिना उसे समझकर उसका उपयोग जीवन भर करें।

एक शिक्षक को शिक्षार्थियों के ज्ञानात्मक, अर्थबोधन, भावात्मक, प्रयोगात्मक एवं कौशलात्मक आदि सभी पहलुओं का विकास करना होता है और वह इसमें तभी सफलता प्राप्त कर सकता है, जब वह कक्षा में जाने से पूर्व स्वयं निम्न बिंदुओं पर विचार करते हुए शिक्षण विधि, शिक्षण सहायक व शिक्षण-अधिगम सामग्री का चुनाव करे —

किस कक्षा को पढ़ाना है?	**क्या और कैसे पढ़ाना है?**
कौन-सा विषय (हिंदी, सामाजिक, पर्यावरण अध्ययन, गणित आदि) पढ़ाना है? क्या पढ़ाना है? (विषय में से कौन-सी विषय-वस्तु पढ़ानी है अर्थात् उपविषय का चुनाव करना)	विषय एवं उपविषय का चुनाव करना
किन उद्देश्यों (ज्ञानात्मक, अर्थबोधन, भावात्मक, प्रयोगात्मक, कौशलात्मक आदि) की प्राप्ति करनी है। अधिगम संप्राप्ति क्या होगी?	अधिगम संप्राप्ति
उपविषय, कक्षा के मानसिक स्तर व अधिगम संप्राप्ति के अनुसार शिक्षण विधि (छात्र केंद्रित) का चुनाव करना, जैसे — अभिनय, नाटक, कहानी, खेल, वार्तालाप, चर्चा, खोजबीन, प्रयोगात्मक, प्रोजेक्ट, समस्या समाधान, अनुकरण आदि का चुनाव करना।	शिक्षण विधि का चुनाव व स्वयं की स्थिति निर्धारित करना (मार्गदर्शक, सलाहकार या मुख्य भूमिका)
उपविषय, शिक्षण विधि व परिवेश के अनुसार ही सहायक सामग्री व शिक्षण-अधिगम सामग्री (दृश्य, श्रव्य या दृश्य-श्रव्य दोनों) का चुनाव करना।	शिक्षण सहायक व शिक्षण-अधिगम सामग्री का चुनाव
शिक्षण-अधिगम विधि का प्रयोग करना और शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान से उन्हें जोड़ते हुए नए तथ्यों व ज्ञान की खोज करने के लिए प्रेरित करना व उन्हें प्रोत्साहित कर उनमें पढ़ने के प्रति लगन उत्पन्न करना व स्वयं ज्ञान का निर्माण करने का मौका देना।	शिक्षण-अधिगम प्रकिया (प्रस्तुतीकरण)
निर्धारित किए गए उद्देश्यों व अधिगम संप्राप्ति व कक्षा स्तर के अनुसार ही उपयुक्त चैकलिस्ट, रेटिंग स्केल, निरीक्षण, प्रश्नावली, (मौखिक व लिखित) आदि बनाकर आकलन करना। साथ-साथ शिक्षण विधि व शिक्षण-अधिगम सामग्री की भूमिका का भी आकलन करना।	आकलन
शिक्षार्थियों में सीखे गए ज्ञान की उपयोगिता के प्रयोगात्मक पक्ष को बढ़ावा देने के लिए कुछ सृजनात्मक कार्य देना।	अधिगम विस्तार

शिक्षण-अधिगम विधि ऐसी होनी चाहिए जिसमें शिक्षार्थियों को न केवल स्वयं करके सीखने का मौका मिले, बल्कि अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग करने का भी पर्याप्त मौका मिले। जिसमें उनके दैनिक जीवन की प्रमुख घटनाओं व अर्जित अनुभवों, जानकारियों, उदाहरणों, शिक्षण-अधिगम सामग्री व आस-पास के वातावरण को शामिल किया जाए। ताकि उनको प्राप्त ज्ञान स्थायी प्रकृति का हो अर्थात् जीवन की समस्याओं का हल करने के लिए उन्हें किताबों को खोल कर उनका हल ढूँढ़ने की ज़रूरत न पड़े और वे किताबी कीड़ा बनने से बचें। इस प्रकार शिक्षा व शिक्षा प्रणाली केवल परीक्षा तक ही सीमित न रहे।

सीखने के पर्याप्त अवसर देते हुए पढ़ाया जाए जिससे कि शिक्षार्थी स्वयं अपने ज्ञान का सृजन करें। शिक्षार्थी अपने स्वयं की सोच एवं अपने स्वयं के विचार बनाएँ। शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षक को उन्हें दैनिक जीवन की गतिविधियों व परिस्थितियों से जोड़ने का प्रयास कराना चाहिए। ऐसी शिक्षण-अधिगम विधि व शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए, जिसमें अधिकांश शिक्षार्थी सक्रिय रहें, उन्हें अपनी बात कहने व सुनने का पूरा मौका मिले। वे एक-दूसरे के साथ अपने विचार साझा करें। शिक्षक को स्वयं एक सहायक एवं मार्गदर्शक के रूप में काम करना चाहिए। शिक्षण-अधिगम विधि व शिक्षण-अधिगम सामग्री का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि सभी विषयों को एक ही शिक्षण-अधिगम विधि, विषय-वस्तु व शिक्षण-अधिगम सामग्री द्वारा पढ़ाना संभव नहीं है। पढ़ाने के लिए विधि व शिक्षण-अधिगम सामग्री का चयन विषय-वस्तु की प्रकृति, अधिगम उद्देश्यों और कक्षा के स्तर आदि पर निर्भर करता है। जैसे गणित, कार्यानुभव, विज्ञान आदि विषयों को व्याख्यान के द्वारा नहीं पढ़ाया जा सकता, ठीक उसी प्रकार छोटी कक्षा के शिक्षार्थियों को भी व्याख्यान के द्वारा नहीं पढ़ाया जा सकता। ऐसी स्थिति में ज़रूरत है बच्चों को सक्रिय रखने की और शिक्षण-अधिगम विधि में परिवर्तन की। इसे एक क्रियात्मक शोध, जो कि कक्षा पाँच के शिक्षार्थियों पर किया गया, के द्वारा संक्षिप्त में समझने का प्रयास करते हैं।

क्रियात्मक शोध

समस्या — जब कक्षा पाँच के शिक्षार्थियों को कर्क रेखा, मकर रेखा, भूमध्य रेखा की स्थिति को मानचित्र पर प्रदर्शित करने व बताने को कहा जाता है तब अधिकांश शिक्षार्थी इन तीनों रेखाओं (कर्क, मकर और भूमध्य रेखा) के नामों को तो जानते हैं परंतु मानचित्र पर एवं बिना मानचित्र के वे उनकी सही स्थिति नहीं बता पाते। वे भूल जाते हैं कि कर्क रेखा, भूमध्य रेखा के ऊपर है या मकर रेखा और कौन-सी रेखा कितने डिग्री पर है? बार-बार बताने (व्याख्यान) के उपरांत भी वे असमंजस में ही रहते हैं और मानचित्र पर गलत रेखाएँ प्रदर्शित करते व गलत जवाब बताते हैं।

संभावित मुख्य कारण — शिक्षण के लिए व्याख्यान विधि का प्रयोग करना।

प्रयास — ऐसी स्थिति में कक्षा पाँच के 10–10 शिक्षार्थियों के दो समूह बनाए गए। समूह 'अ' व समूह 'ब'। 'समूह अ' को परंपरागत विधि (व्याख्यान विधि) के अनुसार कर्क रेखा, मकर रेखा, भूमध्य रेखा की स्थिति को शिक्षक के द्वारा बताया गया। जबकि 'समूह ब' को पढ़ाने व समझाने के लिए प्रश्नोत्तर, प्रदर्शन व चर्चा विधि का उपयोग किया गया। प्रश्नोत्तर, प्रदर्शन, चर्चा का प्रयोग करते हुए रेखाओं का अर्थ बच्चों से निकलवाया गया, उन्हें मानचित्र पर रेखाओं की स्थिति स्पष्ट करायी गयी। इस प्रकार उन्हें नीचे प्रदर्शित शिक्षण विधि के अनुसार पढ़ाया गया।

कक्षा — पाँचवीं

विषय — सामाजिक अध्ययन

समय का निर्धारण — 30–35 मिनट

उपविषय — रेखाएँ (कर्क, मकर और भूमध्य रेखा)

अधिगम संप्राप्ति — विश्व मानचित्र पर रेखाओं की स्थिति स्पष्ट करना व उन्हें मानचित्र पर प्रदर्शित करना।

शिक्षण विधियों का चुनाव — शिक्षार्थी केंद्रित (चर्चा व प्रदर्शन विधि)

शिक्षण सहायक सामग्री का चुनाव — विश्व का मानचित्र व ग्लोब

प्रस्तुतीकरण — शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान का प्रयोग करना व उनमें जिज्ञासा उत्पन्न करने का प्रयास करना। शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान व दैनिक जीवन के अनुभवों के द्वारा रेखाओं का अर्थ स्पष्ट करवाते हुए उसे सरल बनाने के साथ-साथ निम्न प्रश्नों पर चर्चा कराना व उन्हीं से उत्तर निकलवाने का प्रयास कराना, जैसे — निम्न प्रश्नों पर चर्चा कराना —

प्रश्न — भूमध्य का अर्थ? — भूमध्य भूमि के मध्य से (बीच में से)।
(विश्व के मानचित्र व ग्लोब पर रेखाएँ ढूँढ़ने को कहना)

प्रश्न — मकर का मतलब? — मगरमच्छ या घड़ियाल।

प्रश्न — घड़ियाल कैसा जंतु है? — जलीय जंतु।

प्रश्न — यह कहाँ रहता है? — पानी में।

प्रश्न — पानी किस दिशा में बहता है? — नीचे की तरफ।

प्रश्न — नीचे की तरफ कौन-सी दिशा होती है? — दक्षिण।

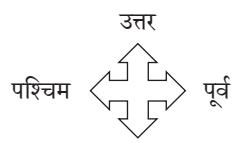

प्रश्न — तब मकर रेखा कहाँ पर स्थित है? — भूमध्य रेखा के नीचे कितने डिग्री पर है? — साढ़े तेइस डिग्री दक्षिण में।

मानचित्र द्वारा स्पष्ट कराना — इस प्रकार पहली दो रेखाओं की स्थिति बच्चों से ही उनके अनुभवों का प्रयोग करते हुए उन्हें स्पष्ट करा दी गई और जब उनसे कर्क रेखा के बारे में पूछा गया तो 'समूह ब' के शिक्षार्थी स्वयं कर्क रेखा की स्थिति को बताने में सक्षम हो गए और मानचित्र पर बिना कोई गलती किए तीनों रेखाएँ रेखांकित करने लगे तथा कौन-सी रेखा कितने डिग्री पर है बताने लगे। यहाँ पर शिक्षक ने एक सहायक एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हुए शिक्षार्थियों को स्वयं अपने ज्ञान का सृजन करने का मौका दिया। इस प्रकार रेखाओं के नाम और मानचित्र/ग्लोब पर उनकी स्थिति की पहचान कराने के लिए कई अवसर दिए गए।

आकलन — दोनों विधियों की जाँच के लिए 20 दिनों के बाद पुनः 'समूह अ' व 'समूह ब' के शिक्षार्थियों से कर्क रेखा, मकर रेखा व भूमध्य रेखा की स्थिति को मानचित्र पर प्रदर्शित करने व बताने को कहा गया। दोनों समूहों का बिना बताए एक टेस्ट लिया गया। 'समूह ब' के लगभग 8 शिक्षार्थियों ने बिना कोई गलती किए कर्क रेखा, मकर रेखा और भूमध्य रेखा की स्थिति को मानचित्र पर रेखांकित किया। इसके साथ ही कौन कितने डिग्री पर है यह भी बताया। वहीं दूसरी तरफ, 'समूह अ' के अधिकांश शिक्षार्थियों ने कर्क रेखा, मकर रेखा, भूमध्य रेखा की स्थिति को मानचित्र पर प्रदर्शित करने में तो गलती की ही, साथ-साथ उनकी स्थिति बताने में भी असक्षम रहे, जिसका मुख्य कारण उन्हें पढ़ाने के लिए चुनी गई व्याख्यान विधि है।

इस प्रकार बॉक्स में दी गयी उपर्युक्त विधि से प्रदान की गई जानकारी ज़्यादा स्थायी व प्रभावशाली साबित हुई और तर्क सहित जानकारी देने के कारण रटने व भूलने की आदत भी बच्चों में कम हुई। इस प्रकार अनेक विषयों को बिना रटाए हुए पढ़ाया जा सकता है। जिससे शिक्षार्थी के अंदर न केवल समझ विकसित होगी, बल्कि उसकी स्मरण शक्ति व तर्क शक्ति में भी सुधार होगा। वह तर्क व तथ्यों के आधार पर चीज़ों को सीखेगा और इस प्रकार समझ के साथ सीखे गए ज्ञान से शिक्षार्थी की दीर्घकालीन स्मृति व समझ दोनों मज़बूत होती हैं। शिक्षण-अधिगम विधि को प्रभावी बनाए जाने के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा सकते हैं, जैसे —

- स्वतंत्र अभिव्यक्ति का मौका देना व पूर्व अनुभवों का प्रयोग कराना।
- अपने व दूसरों के अनुभवों को साझा करना और समूह चर्चा कराना।
- घटनाओं का वर्णन कराना व चर्चा कराना।
- तथ्यों का विश्लेषण व संश्लेषण कराना।
- आस-पास की चीज़ों व प्रवेश का प्रयोग कराना।
- चित्र अवलोकन कराना।
- समुदाय का प्रयोग संसाधन के रूप में कराना।
- क्षेत्र भ्रमण पर ले जाना।
- विचारों को स्पष्ट करवाना व अपने स्वयं के विचार बनाना।
- अपने शब्दों में अर्थ स्पष्ट कराना।
- कठिन चीज़ों को सरल बनवाना।
- शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रयोग कराना (दृश्य, श्रव्य या दृश्य-श्रव्य दोनों)

- बच्चों के मानसिक स्तर के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना व उन्हें कार्य करने का मौका देना।
- जीवंत उदाहरणों का प्रयोग कराना।
- संभावित वास्तविक वस्तुओं का प्रयोग करवाना।
- विचार स्पष्ट करने के लिए मॉडल दिखाना व बनवाना।
- करके दिखाना व करके सीखने के अवसर देना।
- कहानी, कविता व नाटकीय ढंग से पढ़ाना व अभिनय कराना।
- खेल के माध्यम से सिखाना।
- छोटी-छोटी शैक्षिक वीडियो दिखाना।
- अदृश्य परिकल्पनाओं का प्रयोग न करना, बल्कि वास्तविकताओं से परिकल्पनाओं पर ले जाने का प्रयास करना।
- परंपरागत शिक्षण विधियों के स्थान पर चर्चा, प्रदर्शन, खोज व प्रयोगात्मक विधियों आदि का प्रयोग करना।
- समय-समय पर चुनौतियाँ एवं अवसर देकर आकलन करना।

शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रयोग कहाँ, किसके लिए और क्यों? इसे दो उदाहरणों के द्वारा समझने का प्रयास करते हैं।

उदाहरण 1 — जब कक्षा प्रथम व द्वितीय के शिक्षार्थियों को फलों के बारे में पढ़ाया जाता है तब शिक्षार्थियों में समझ विकसित करने के लिए उन्हें फलों के चित्र के साथ-साथ वास्तविक फल भी दिखाने होंगे। ऐसा करने से शिक्षार्थी फलों के आकार, उसके रंग आदि के बारे में जान जाएँगे। परंतु जब यही फलों की बात बड़ी कक्षाओं में करते हैं, तो तब उन्हें हर फल का चित्र या वास्तविक फल दिखाने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि जैसे ही उन फलों का नाम लेते हैं, जो उन्होंने पिछली कक्षा में या अपने आस-पास देखे हैं, तो उस फल का नाम लेते ही, उन फलों की तसवीर बच्चे के मानसिक पटल पर आ जाती है। उन फलों से संबंधित अधिकांश बातें, जो उन्होंने पिछली कक्षा में पढ़ी थीं उसे वे पुनः स्मरण कर लेते हैं। इसका अर्थ है कि वहाँ पर शिक्षण सामग्री का उपयोग अवश्य करना होगा, जहाँ पर पढ़ाने वाली विषय-वस्तु शिक्षार्थियों के लिए नई हो या जिसकी स्थिति उसे स्पष्ट न हो।

उदाहरण 2 — इसे एक अन्य उदाहरण के द्वारा भी समझा जा सकता है, जैसे — कक्षा चार की रा.शै.अ.प्र.प. की *पर्यावरण अध्ययन* की पाठ्यपुस्तक में पाठ 11 का नाम 'फुलवारी' है। इस पाठ के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के फूलों तथा फूलों की घाटी के बारे में बताया गया है। जब शिक्षार्थियों से गुलाब, कमल, गेंदे का चित्र या इन फूलों को पहचानने को या बिना देखे उनका चित्र बनाने को कहते हैं, तो वे इन फूलों व उनके चित्रों को तुरंत पहचान लेते हैं। वे बिना देखे उनका चित्र बनाने का प्रयास करते हैं और बना भी लेते हैं, क्योंकि इन फूलों का प्रयोग कभी न कभी उनके घरों में पूजा के लिए या सजावट के लिए किया हुआ होता है। वे उनके आकारों व रंगों की जानकारी रखते हैं। परंतु जब उन्हीं शिक्षार्थियों को गुड़हल या नलिनी फूल के चित्र को पहचानने या बनाने को कहा जाता है, तब वे उसे न ही पहचान पाते हैं और न हीं बना पाते हैं। ऐसा इसलिए नहीं कि चित्र बनाना मुश्किल है, बल्कि इसलिए है क्योंकि पहले कभी भी शिक्षार्थियों ने उस फूल को अपने आस-पास

देखा ही नहीं। इसलिए उनका चित्र उनके मानसिक पटल पर नही बन पाया। वे चित्र बनाने से पहले उसे देखना चाहते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति या बच्चा उन विषयों के बारे में सही कल्पना नहीं कर सकता, जो उन्होंने केवल सुनी है। यह बात सिर्फ़ इन्हीं शिक्षार्थियों पर लागू नहीं होती, बल्कि सभी पर भी लागू होती है। इस प्रकार शिक्षण-अधिगम सामग्री (जैसे — चॉर्ट, मॉडल, वास्तविक वस्तुएँ आदि) सहायक सामग्री होती हैं, जो न केवल विषय को रोचक व सरल बनाती हैं, बल्कि विचारों में स्पष्टता लाकर उन्हें दीर्घकालीन स्मृति का हिस्सा बनाती हैं।

निष्कर्ष

अत: हम यह कह सकते हैं कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण-अधिगम विधि व शिक्षण-अधिगम सामग्री की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षण-अधिगम विधि ऐसा तरीका है जो शिक्षार्थियों के ज्ञान चक्षुओं को न केवल खोलती है, बल्कि उसका सही उपयोग करना भी सिखाती है। यह सब प्राप्त करने में शिक्षण-अधिगम सामग्री हमारी सहायता करती है। जैसे एक सिपाही का हथियार उसकी बंदूक व उसकी ताकत होती है, जिससे वह देश की रक्षा करता है, ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक का सबसे बड़ा हथियार उसकी कलम, उसका ज्ञान व उसके द्वारा अपनाई गई शिक्षा प्रदान करने की शिक्षण विधि है जिससे वह ज्ञान का प्रेषण करता है और देश का भविष्य बनाता है। अपने ज्ञान के प्रकाश से वह शिक्षार्थियों के अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करने का प्रयास करता है। वह भविष्य के लिए न केवल नई पीढ़ी तैयार करता है, बल्कि भविष्य को नई दिशा भी देता है। इस समाज तथा देश को शिक्षक से बहुत अधिक अपेक्षाएँ हैं, जिन पर उसे हर हालत में खरा उतरना है।

संदर्भ

एस.सी.ई.आर.टी. 2013. पृथ्वी पर स्थान खोजें. *पाठ्यपुस्तक सामाजिक अध्ययन — हमारी दुनिया* (कक्षा पाँच). पृ. 20, दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो, नयी दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2009. फुलवारी. *पर्यावरण अध्ययन आस-पास* (कक्षा चार). पृ. 84, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.